भारत सरकार

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 331

09 दिसम्बर, 2022 को उत्तरार्थ

विषय: कृषि पर वैश्विक जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

331. श्रीमती फूलो देवी नेताम:

क्या कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) भारतीय कृषि पर वैश्विक जलवायु परिवर्तन के नकारात्मक प्रभाव का ब्यौरा क्या है;

(ख) सरकार द्वारा जलवायु अनुकूल कृषि के संबंध में क्या प्रयोग, नवाचार किए जा रहे हैं, उपलब्धियों सहित तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) वन उत्पादों और वन उपज पर जलवायु परिवर्तन का क्या प्रभाव पड़ा है और इस संबंध में सरकार की कार्य योजना का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री (श्री नरेन्द्र सिंह तोमर)

(क): कृषि पर वैश्विक जलवायु परिवर्तन के प्रमुख नकारात्मक प्रभावों में जलवायु परिवर्तन प्रेरित बढ़ते तापमान शामिल है जिससे वाष्पीकरण में वृद्धि होगी और इसके परिणामस्वरूप फसल की पानी की मांग और सिंचाई के लिए पानी की आवश्यकता में वृद्धि; वर्षा के पैटर्न में बदलाव, मौसम से संबंधित खतरे, मृदा और पानी की गुणवत्ता में गिरावट, कीड़ों, बीमारियों, मृदा वनस्पतियों और जीवों की बदलती गतिशीलता, भूमि पर समुद्र के पानी का प्रवेश और चरम जलवायु के कारण उत्पन्न होने वाले जैविक और अजैविक तनाव शामिल हैं। बेमौसम बारिश और तापमान में बदलाव के कारण बागवानी क्षेत्र बुरी तरह प्रभावित होने की संभावना है। जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ते तापमान से पशुधन उत्पादन और स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ने की संभावना है जिसके परिणामस्वरूप दूध, मांस, ऊन और भारवाहक क्षमता के मामले में उत्पादकता में गिरावट आई है।

(ख): सरकार राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन (एनएमएसए) के माध्यम से जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए कदम उठा रही है, जो राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना (एनएपीसीसी) के मिशनों में से एक है। मिशन का उद्देश्य भारतीय कृषि को बदलती जलवायु के प्रति अनुकूल बनाने के लिए रणनीतियों को विकसित और कार्यान्वित करना है। एनएमएसए को तीन प्रमुख घटकों अर्थात वर्षा सिंचित क्षेत्र विकास (आरएडी); कृषि अनुप्रयोग जल प्रबंधन (ओएफडब्ल्यूएम); और मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन (एसएचएम) के लिए अनुमोदित किया गया था। इसके बाद, चार नए कार्यक्रम जैसे मृदा स्वास्थ्य कार्ड (एसएचसी), परम्परागत कृषि विकास योजना (पीकेवीवाई), पूर्वोत्तर जैविक मूल्य श्रृंखला विकास मिशन (एमओवीसीडीएनईआर) और कृषि वानिकी उप-मिशन (एसएमएएफ) शुरू किए गए। वर्ष 2015-16 के दौरान, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (पीएमकेएसवाई) का संचालन किया गया था, जिसमें एनएमएसए के ओएफडब्ल्यूएम घटक को पीएमकेएसवाई के प्रति बूंद अधिक फसल (पीडीएमसी) घटक के तहत शामिल किया गया था। एनएमएसए के तहत उपरोक्त कार्यक्रमों के अलावा, पुनर्गठित राष्ट्रीय बांस मिशन (एनबीएम) को अप्रैल 2018 में लॉन्च किया गया था। इसके अलावा उभरते परिदृश्य के लिए आईसीएआर ने 151 कमजोर जिलों में अनुकूल प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन करने के अलावा अवसंरचनात्मक और रणनीतिक अनुसंधान के संचालन के लिए वर्ष 2011 में राष्ट्रीय जलवायु अनुकूल कृषि नवाचार नामक एक प्रमुख परियोजना शुरू की है। आईसीएआर ने 8 जलवायु अनुकूल किस्मों का विकास किया और चरम मौसम से संबंधित समस्याओं में लगभग 170 फसल किस्मों का मूल्यांकन किया। 650 जिलों के लिए कृषि आकस्मिकता योजनाएँ विकसित की गई हैं।

(ग): पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अनुसार, पिछले एक दशक में राष्ट्रीय स्तर पर समग्र वन क्षेत्र में वृद्धि हुई है, हालांकि वन उत्पादों और वन उपज पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव की निगरानी के लिए विशिष्ट अध्ययन नहीं किया गया है।

*****